भारतीय अर्थव्यवस्था स्टैगफ्लेशन (Stagflation) की ओर जा रही है:- IInd शास्त्री ~~प्रथम वर्ष~~ Date ~~[illegible]~~ शास्त्री → II

जनवरी 2020 में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रा स्फीति की दर 7.59% के स्तर पर हो जाने तथा 2019-20 में सकल घरेलू उत्पाद की संवृद्धि दर 5.0% नीचे आ जाने से भारतीय अर्थव्यवस्था धीरे-धीरे (Stagflation) स्टैगफ्लेशन की ओर बढ़ती जा रही है। स्टैगफ्लेशन Stagflation वह विषम स्थिति होती है, जहाँ आर्थिक विकास की दर में गिरावट आती है जबकि मुद्रा स्फीति (Inflation) की दर में वृद्धि होती है। जनवरी 2020 में खाद्य ~~पदार्थ~~ पदार्थों की कीमतों में 13.62% की दर से वृद्धि हो रही है जबकि Dec 2019 में इनकी वृद्धि दर 14.19% थी, खाद्य पदार्थों में भी सब्जियों (Vegetables) मुद्रास्फीति की दर जहाँ 50.19% प्रतिशत रही, वहीं दालों में 16.71% जहाँ तक आर्थिक विकास की दर में सुधार आने का प्रश्न है, तो उसमें कोई उल्लेखनीय वृद्धि होने की संभावना नहीं है। I.M.F (International Monetary Fund) ने विकास दर 4.8% तथा 2020 में 5.8% प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया गया है, जबकि विश्व बैंक (World Bank) के अनुसार भारत में विकास दर 2019 में 5% प्रतिशत तथा 2020 में 5.8% (प्रतिशत) रह सकती है। R.W. [illegible] Sunk Sein [illegible] 4/9/20

13 [illegible] 4/9/20

[illegible]
मो. [illegible]

उपशास्त्री - IInd yr

Date 4/9/20.

भारत में जनसंख्या वृद्धि के कारण

भारत में जनसंख्या वृद्धि के लिए सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, जनस्वास्थ्यकीय एवं प्रशासनिक, राजनीतिक कारण उत्तरदायी है। सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों में बच्चे को भगवान की देन माना जाता है। साथ ही साथ मोक्ष-प्राप्ति के लिए पुत्र का होना आवश्यक माना जाता है, सर्वेक्षण से पता चला है कि 86% लोग पुत्र को प्राथमिकता देते हैं। पुत्र की चाहत में अधिक से अधिक बच्चे पैदा करते हैं। इसी प्रकार भारत की संयुक्त परिवार व्यवस्था भी जनसंख्या वृद्धि के लिए उत्तरदायी है जिसमें केवल सीधे माँ बाप की जिम्मेदारी नहीं होती है। यहाँ बच्चे के पालन पोषण से लेकर शिक्षा तक की जिम्मेदारी माँ-बाप तक सीमित न रहकर परिवार के अन्य सदस्यों के बीच बंट जाती है। इसी प्रकार बाल-विवाह की प्रचलन भी इसके लिए कम जिम्मेदार नहीं है, जिसे भारत के गर्म जलवायु का भी मदद मिलती है जिससे लड़कियाँ अपेक्षाकृत कम आयु में ही माँ बनने की क्षमता प्राप्त कर लेती हैं। भारत में कानूनी रूप से लड़की के विवाह की आयु 18 वर्ष निर्धारित की गई है। कम उम्र में विवाह के कारण न केवल महिलाएं लंबी अवधि तक प्रजनन काल में होती हैं बल्कि इसमें परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता भी उत्पन्न नहीं हो पाती है। जनांकिकीय कारकों को भी जनसंख्या वृद्धि के लिए जिम्मेदार माना जा सकता है। भारत की बड़ी आबादी युवा है जिसके कारण भारत की लगभग आधी आबादी प्रजनन आयु-वर्ग (Reproductive age) की है, फलस्वरूप जनसंख्या में निरंतर वृद्धि की दर कायम रही है। इसी प्रकार उच्च शिशु मृत्यु दर को भी जनसंख्या वृद्धि के लिए उत्तरदायी माना जाता है जो असुरक्षा की उस भावना को जन्म देती है, जिससे मिलकर के लिये दम्पतियों को अधिक से अधिक बच्चे पैदा करने की प्रेरणा मिलती है।

आर्थिक कारकों में गरीबी (Poverty) एवं बेरोजगारी प्रमुख है। ऐसा माना जाता है कि गरीबी प्रजननता के लिए आदर्श वातावरण का निर्माण करती है, जबकि विकास सबसे अच्छा गर्भ निरोधक है। भारत की एक चौथाई से भी अधिक जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे है जिनके लिए अधिक से अधिक बच्चों को पूंजी समझा जाता है। भारत में वृद्धावस्था में सामाजिक, आर्थिक सुरक्षा जैसे बीमा, पेंशन इत्यादि का अभाव है। इसके अलावा जनसंख्या वृद्धि के लिए राजनीतिक, प्रशासनिक उदासीनता भी कम जिम्मेदार नहीं है। उपरोक्त कारकों के अलावा गर्भ निरोधक साधनों, प्रजनन एवं सूचनाओं की सर्वव्यापी एवं कारगर उपलब्धता की कमी, महिलाओं की निम्न सामाजिक, आर्थिक स्थिति, राजनीतिक प्रशासनिक प्रतिबद्धता का अभाव, बेरोजगारी जैसे कारण भी जनसंख्या नियंत्रण में बाधक है।

शास्त्री - Ist

शास्त्री - Ist वित्त
Date - 4/9/20.

उत्पादन के दो मौलिक साधन
(Land and Labour are two original Factors of Production)

हमें जानते हैं कि उत्पादन के पाँच साधन हैं, - भूमि, पूंजी, श्रम, व्यवस्था एवं साहस। वास्तव में उत्पादन का काम इन पाँच साधनों के सहयोग से होता है इनमें से कोई भी एक दूसरे से कम महत्वपूर्ण नहीं है लेकिन Prof. Hicks के अनुसार उत्पादन के दो ही मुख्य एवं साधन हैं - (i) श्रम, (ii) पूंजी। उत्पादन का कार्य इन्हीं दोनों के सम्मिलित सहयोग से होता है। आर्थिक विकास की प्रारंभिक स्थिति में मनुष्य भूमि एवं श्रम के सहयोग से ही अपना जीवन व्यतीत करता था, भूख लगने पर वह वनों से फल-फूल तोड़कर खा लेता था, तथा प्यास लगने पर जलाशय से जल पीकर अपनी कामी मना लेता था, इन लोगों के अनुसार भूमि और श्रम के बिना उत्पादन का कार्य नहीं हो सकता अतः वे उत्पादन के अनिवार्य आवश्यक एवं अपरिहार्य साधन हैं। इस मत के अर्थशास्त्री पूंजी को उत्पादन का मौलिक साधन नहीं मानते हैं। पूंजी पिछली बचत का परिणाम है यह भूमि और श्रम के सम्मिलित सहयोग का परिणाम है अतएव इसे उत्पादन का मौलिक साधन नहीं कहा जा सकता। किन्तु वास्तव में आज के विशालकाय उद्योगों के युग में पूंजी का इतना महत्व हो गया है कि इसे उत्पादन का एक पृथक एवं महत्वपूर्ण साधन माना जाता है। जहाँ तक श्रम का सवाल है यह उत्पादन का सक्रिय साधन है। श्रम के अन्तर्गत मनुष्य के वे सभी शारीरिक एवं मानसिक प्रयत्न आते हैं, जो किसी आर्थिक उद्देश्य से किये जाते हैं। मनुष्य आप ही भूमि को उत्पादन के कार्य में लगाया जाता है। इसलिए श्रम उत्पादन का सक्रिय साधन (Active Factor) है और भूमि उत्पादन का निष्क्रिय (Passive) साधन है। प्रो० Hicks ने भूमि को उत्पादन का पृथक (अलग) साधन नहीं मानकर इसकी गणना पूंजी के अन्तर्गत ही की है भूमि को इन्होंने पूंजी की श्रेणी इसलिए रखा है कि भूमि को पूंजी के उपयोग द्वारा ही उत्पादन के योग्य बनाया जाता है। इसी प्रकार इन्होंने व्यवस्था को भी एक विशिष्ट प्रकार की श्रम बतलाते हुए इसे उत्पादन का एक स्वतंत्र साधन नहीं मानकर इसकी गणना श्रम के अन्तर्गत ही की है। किन्तु वास्तव में भूमि को पूंजी का एक भाग नहीं माना जा सकता, क्योंकि भूमि प्रकृति-प्रदत्त (Free gifts of nature) है पर पूंजी मनुष्य होती है, किन्तु पूंजी के साथ ऐसी बात नहीं पायी जाती है। अतएव, भूमि को पृथक साधन मानना अति आवश्यक है।

G.M.S. College Sukhdena.

Bhagwan
4/9/20.